सिंधु घाटी सभ्यता की वास्तुकला एवं नगर तथा भवनों की विशेषताएं

भाग:-1

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग
SNSRKS College Saharsa

सिंधु घाटी सभ्यता की वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण सैन्धव सभ्यता के नगरों में देखने को मिलता है. भारतीय इतिहास में नगरों का प्रादुर्भाव सर्वप्रथम इसी सभ्यता में हुआ. परकोटे, गोपुर, अटारियों आदि से युक्त दुर्ग, लोगों के घर के अलावे प्रमुख भवन जैसे की मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार, अन्नागार तथा सभागार आदि की रचना निःसंदेह सिंधु घाटी सभ्यता के समुन्नत वास्तुकला के साक्षी है.

इस सभ्यता के वास्तुकला की झलक हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो जैसे प्रमुख नगरों के विश्लेषण से प्राप्त होती होती है. कुछ अपवाद को छोड़ दे तो ये दोनों शहर पुरे सभ्यता का प्रतिनिधित्व करते है. सिंधु सभ्यता के नगरों के विश्लेषण से हमें पता चलता है की इस सभ्यता के लोग वास्तुकला के बहुत अच्छे जानकार थे.

सैन्धव सभ्यता के प्रमुख भवन लोगों के निवास गृह, मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार, अन्नागार तथा सभागार के आलावा यहाँ के सड़क, नालियां एवं अन्य भवनें सभी कुछ नियोजित रूप से विकसित हुई प्रतीत होती है. निर्माण में प्रयुक्त ईंटें भी समकालीन सभ्यता के मुकाबलें बेहतर थी. हालाँकि इस सभ्यता के भवन सादगीपूर्ण रूप से बने है. इनमें समकालीन सभ्यता जैसे अलंकरण नहीं मिलते है. जैसे की मिस्त्र की सभ्यता जैसे विशाल पिरामिड आदि. फिर भी उनकी सुदृढ़ता एवं निर्माण की उत्कृष्टता दर्शनीय है.

सभी पहलुओं के विश्लेषण के बाद निश्चित तौर पर कहा जा सकता है की सिंधु घाटी सभ्यता वास्तुकला की दृष्टि से उत्तम थी. आप इस पोस्ट में सिंधु घाटी की वास्तुकला की विशेषताओं के बारे में पढेंगें.